सक्सेस मिरर

सफलता का कैप्सूल

Visit us at : www.pdgroup.in

वर्ष : 13 | अंक : 146 | जून : 2022

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

8 समसामयिकी घटना संग्रह

9 समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

17 आर्थिक घटना संग्रह

- भारतीय रिजर्व बैंक ने NBFCs की उधार सीमा को सीमित किया
- नीति आयोग ने किया राज्य ऊर्जा और जलवायु सूचकांक का शुभारम्भ
- सरकार ने 3 सामान्य बीमा कम्पनियों में निवेश बढ़ाया
- भारत में प्रति व्यक्ति आय में दिल्ली तीसरे स्थान पर

21 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- दाहोद में ₹ 22,000 करोड़ की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन
- अटल इनोवेशन मिशन को मार्च 2023 तक जारी रखने की मंजूरी
- अनाज वितरण योजनाओं में फोर्टिफाइड चावल शामिल
- महाराष्ट्र डिटिजल टिकट बस सेवा शुरू करने वाला पहला राज्य
- भारत का पहला शुद्ध हरित हाइड्रोजन संयंत्र असम में शुरू

25 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- मुम्बई और हैदराबाद बने ट्री सिटीज ऑफ द वर्ल्ड 2021
- भारत और आस्ट्रेलिया के बीच आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता
- लिबरल डेमोक्रेटिक इंडेक्स में भारत 93वें स्थान पर
- मुरादाबाद विश्व स्तर पर दूसरा सबसे ज्यादा ध्वनि प्रदूषित शहर
- दुनिया के सबसे गर्म स्थानों में कुवैत

29 खेल खिलाड़ी

- खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2021 का लोगो, शुभंकर लॉन्च
- आस्ट्रेलिया ने जीता आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप 2022
- मियामी ओपन टेनिस टूर्नामेंट 2022 ओवरव्यू
- रेलवे ने जीता ओबैदुल्ला खान हॉकी कप

33 विज्ञान समाचार

34 महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

37 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

40 **सामयिक लेख**—नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग

41 **भाषायी लेख**—विश्व की सभी भाषाओं का हो सम्मान

42 **चिकित्सीय लेख**—स्वास्थ्य क्षेत्र की बढ़ती चुनौतियाँ

43 **सामाजिक लेख**—आरक्षण और योग्यता

45 **श्रम विधि लेख**—भारत में व्यावसायिक सुरक्षा की आवश्यकता

46 **शैक्षिक लेख**—मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता

78 **प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता**

80 **तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-143 का परिणाम**

81 **रोजगार अवसर**

हल प्रश्न-पत्र

47 एस.एस.सी संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल (टियर-I) परीक्षा, 2020

57 एस.एस.सी मल्टी टॉस्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ परीक्षा, 2020

65 अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा, 2022

मॉडल हल

73 उत्तराखण्ड पुलिस विभाग के अन्तर्गत आरक्षी संवर्ग के जनपदीय पुलिस, पीएसी/आईआरबी तथा फायरमैन पदों पर सीधी भर्ती परीक्षा-2022 हेतु विशेष हल प्रश्न

संस्थापक सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्र जैन | सम्पादक : राहुल जैन | रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2

ई-मेल : सम्पादकीय : publisher@pdgroup.in कस्टमर केयर : care@pdgroup.in

- सम्पादकीय ऑफिस : 1, स्टेट बैंक कॉलोनी, खन्दारी, आगरा-मथुरा बाईपास, **आगरा**–282 005 — **फोन**–2531101, 2530966
- दिल्ली ऑफिस : 4845, अंसारी रोड, दरियागंज, **नई दिल्ली**–110 002 — **फोन**–011-23251844, 43259035
- पटना ऑफिस : पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, **पटना**–800 004 — **मो**–09334137572
- हैदराबाद ऑफिस : 16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा, आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड, (यूनियन बैंक के बगल में), **हैदराबाद**–500 036 (तेलंगाना) — **मो**–09391487283
- हल्द्वानी ऑफिस : 8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, **हल्द्वानी**, जिला–नैनीताल–263 139 (उत्तराखण्ड) — **मो**–07060421008

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे–इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी **'सक्सेस मिरर'** की नहीं है.

सम्पादकीय

स्थायी जीवन मूल्यों को जानने का प्रयत्न कीजिए

"Traditions are the guideposts driven deep in our subconscious minds. The most powerful ones are those we can't even describe, aren't even aware of."

—Ellen Goodman

प्रगति और प्रयोग के वर्तमान युग में परम्परा को नकारना तथा परम्परावादी का उपहास-भर्त्सना तक करना आधुनिकतावादी एवं बौद्धिकतावादी होने का लक्षण बन गया है.

परम्परा का पालन और परम्परा का विरोध यह द्वन्द्व भी शताब्दियों से चला आ रहा है. एक वर्ग कहता आया है परम्परा पिछड़ेपन की निशानी है, दूसरा वर्ग कहता है कि परम्परा का विरोध मूर्ख करते हैं, प्रवीणजन नहीं.

प्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार का कथन है कि जीवित परम्परा आत्महीन नहीं होती, वह समाप्त नहीं होती, उसमें नाना रूपों और प्रारूपों में खिलते जाने की शक्ति प्रवाहित रहती है. बालक समझदार होते ही विद्याध्ययन करना आरम्भ कर दे–यह भी परम्परा ही है. वह किस रूप में, किस अवस्था में ऐसा करे–यह विभिन्न तत्वों पर निर्भर रहता है? इसी को जैनेन्द्रजी ने परम्परा का विविध रूपों में खिलना कहा है.

अंग्रेज विचारक एडिसन का कहना है कि परम्परा इतिहास को विशेष सहयोग प्रदान करती है, लेकिन उसकी बातों का सूक्ष्म रूप से निरीक्षण कर लें, तभी हमें उस पर विश्वास करना चाहिए. इसी तथ्य को आधुनिक चिंतनधारा के पुरोधा टॉल्सटाय ने अधिक सशक्त भाषा में इस प्रकार व्यक्त किया है–मनुष्य को तर्कबुद्धि द्वारा परम्परा की पड़ताल करनी चाहिए. पाठक इस सम्बन्ध में यह बात समझ लें कि प्रत्येक व्यक्ति की तर्कबुद्धि का स्तर व्यक्ति के विकास स्तर के अनुसार होता है. अतएव तर्काधारा परम्परा का मूल्यांकन विषयगत न होकर विषयिगत होगा.

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के प्रणेता कार्ल मार्क्स ने केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को जीवन का प्रमुख उद्देश्य माना है. उनका कहना है कि साध्य की सिद्धि साधन के औचित्य का प्रमाण होती है.

क्या हम लोग कभी यह विचार करते हैं. कि परम्परा का निर्माण किस प्रकार होता है? क्या उसका निर्माण शून्य में–रिक्ति में हो जाता है? आधुनिक युग के सर्वमान्य दार्शनिक चिंतक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचार/ध्यातव्य होने चाहिए; यथा–"It takes centuries to make a little history; it takes centuries of history to make a tradition."

ज्ञान विश्वास एवं कतिपय मान्यताओं एवं जीवन विषयक सिद्धान्तों के त्रिकोण द्वारा परम्पराओं का निर्माण होता है और वे एक पीढ़ी द्वारा अगली पीढ़ी को मौखिक परम्परा द्वारा अथवा व्यावहारिक परम्परा द्वारा प्रदान की जाती रहती है. परम्पराओं के पीछे युगीन अनुभव निहित रहते हैं. प्रत्येक व्यक्ति अपनी समझ और सुविधा के अनुसार परम्परा का स्वरूप समझने का प्रयत्न करता है. इस प्रकार परम्परा का स्वरूप परिवर्तित एवं विकृत होता रहता है, क्योंकि उसके निर्माण की अपेक्षा उसको परिवर्तित करने में अपेक्षाकृत कम ज्ञान एवं अनुभव की आवश्यकता होती है. कालान्तर में परम्परा अंधविश्वास में परिणत हो जाती है और तब उसके त्याग की आवश्यकता का अनुभव होने लगता है. विचार-पद्धति कठमुल्लापन का रूप ग्रहण कर लेती है, परम्परा के नाम पर फतबे और आदेश जारी किए जाने लगते हैं. परम्परागत अनेक रीति-रिवाजों के पूर्वाग्रहों का बन जाना स्वार्थियों की संकुचित मनोवृत्ति का परिणाम होता है, तब क्या हमें कबीर की वाणी का स्मरण करते हुए कहना चाहिए "वेद पुराण कहो मत झूठे, झूठा जो न विचारे।"